आधुनिक साहित्य में लम्बी कविता की प्रासंगिकता

डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि'
शोध निर्देशक, हिन्दी
विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग
संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय अम्बिकापुर
सरगुजा छ0ग0

संतोष कुमार यादव
शोधार्थी हिन्दी
विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग
संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय अम्बिकापुर
सरगुजा छ0ग0

साहित्य का संबंध समाज से आदिकाल से ही रहा है, दोनों एक–दूसरे समानान्तर ही चलती हैं। यद्यपि कविता मानव जाति के साथ–साथ अत्यन्त प्राचीन अवस्था से चली आ रही है। कविता मानव के लिए अत्यन्त निकटवर्ती है, आदिम काल से मानव जिजीविषा अनेक प्रकार के आर्थिक साधनों को संयोजित कर आगे बढ़ता चला है। किसी काल विशेष के साहित्य का अध्ययन कर हमें सहज ही तत्कालीन समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का ज्ञान हो जाता है। इस कारण किसी काल के साहित्य , धर्म और कला तथा सम्यक संस्कृति का अध्ययन हेतु उस काल के सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन आवश्यक है।

लम्बी कविता वास्तव में आधुनिक काल के लोगो की अंतर्मन की कविता है। यह वर्तमान मानव को उसके पूरे परिवेश, वातावरण सहित अभिव्यक्ति प्रदान करने का प्रयास है। समकालीन जीवन में मनुष्य अपने जीवन में कई प्रकार के जटिलता, कुण्ठा, निराशा, आक्रोश, विवशता आदि मानवीय भावनाओं को जी रहा है, उसके लिए जीवन एक ऐसा संघर्ष है, जिसका कोई अंत नहीं अर्थात् उसका संघर्ष जीवनपर्यन्त चलता ही रहता है और वह अनेक प्रयास करने के बावजूद उससे पार नहीं पाता, विवश होकर वह कुण्ठा, निराशा, आक्रोश आदि भावों से भर जाता है। इन सभी भावों को सम्पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने की कविता ही है लम्बी कविता।

कविता की परिभाषा

ज्ञात है कि समय के अनुरूप कविता की परिभाषाओं के स्वरूप में भी भिन्नता स्पष्ट परिलक्षित होती है। यह भिन्नता तत्कालीन समय, देशकाल, वातावरण से पूर्णतः प्रभावित होने के कारण रहती है जो कविता में दृष्टिगत होती है। इसी कारण कविता अथवा साहित्य के किसी

भी रूप में उस काल जिस काल में कविता अथवा साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने आप में समाहित रखती है।

1. भरतमुनि :–

नाट्यशास्त्र के रचयिता आचार्य भरतमुनि ने काव्य की परिभाषा के संबंध में विचार करते हुए लिखते हैं –

'' मृदुललित पदाढ्यं गूढ़शब्दार्थहीनम् ,

जनपदसुखबोध्यं युक्तिमन्नृत्ययोज्यम्।

बहुरसकृतमार्ग सन्धिसंधानयुक्तम्।

स भवति शुभकाव्यं नाटक प्रेक्षकाणाम्।। '' [1]

अर्थात् '' मधुर, लालित्य से युक्त , सहज अर्थों से युक्त, लोक कल्याणकारी नृत्य में प्रयुक्त होने के योग्य, सरस, निश्चित क्रम में पदावली नाटक काव्य कहलाती है।''

2. आचार्य विश्वनाथ :–

आचार्य विश्वनाथ जी ने काव्य में रस के महत्व को प्रतिपादित करते रस से युक्त वाक्य को ही काव्य की संज्ञा दी है –

'' वाक्यं रसात्मकम् वाक्यं। ''[2]

3. पंडितराज जगन्नाथ :–

आचार्य विश्वनाथ के भांति ही जगन्नाथ जी ने भी रस से युक्त अर्थात् रमणीय अर्थों को प्रतिपादित करने वाले शब्दों को काव्य की संज्ञा प्रदान की है –

'' रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। ''[3]

4. आचार्य भामह :–

अलंकार सम्प्रदाय को प्रतिपादक आचार्य भामह ने काव्य की परिभाषा के संबंध में विचार करते हुए लिखा है कि शब्द और अर्थ के संयोग से निःसृत स्वरूप ही काव्य है –

'' शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।''[4]

5. आचार्य दण्डी :–

आचार्य दण्डी के अनुसार विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले पदावली ही काव्य हैं।

'' शरीरं तावदिष्टार्थमव्यवच्छिन्न पदावली।''[5]

6. हेमचंद्र :–

आचार्य हेमचन्द्र ने दोषों से रहित गुण से युक्त तथा अलंकारों से परिपूर्ण शब्दार्थों को काव्य मानते हुए लिखते हैं –

''अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थौं काव्यम्। ''

7. वामन :–

रीति सम्प्रदाय को प्रतिपादित करने वाले आचार्य वामन ने काव्य में अलंकार को महत्व प्रदान करते हुए काव्य की परिभाषा के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हैं –

''काव्यंग्राह्यमलंकारात्''[6]

8. कबीरदास –

कबीरदास जी निर्गुण परम्परा के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं, जिनका दृष्टिकोण सुधारवदी था। उनके दोहे उपदेशात्मक हैं जिनमें जनमानस को बाह्य आडम्बर छोड़ निर्गुण, निराकार भक्ति से ईश्वर प्राप्ति का मार्ग प्रदर्शित किया गया है। कबीर दास जी ने काव्य के संबंध में कहा है कि रसयुक्त कवि कर्म ही काव्य है –

''सोई आषिर सोई बैयन, जन जू – जू बाचवंत।

कोई एक मेले लवणि, अमी रसायण हुत।। [7]

9. चिंतामणि –

इन्होंने संस्कृत के आचार्यों के अनुरूप ही काव्य की परिभाषा प्रस्तुत की है –

''सगुनालंकारन सहित, दोष रहित जो होई।

शब्द अर्थ ताको कवित्त, कहत बिबुध सब कोई।। [8]

अर्थात् दोषहीन अलंकारों से युक्त सगुण शब्दार्थों को काव्य कहा जाता है।

10. आचार्य श्रीपति –

इन्होंने अलंकार के साथ रस को भी महत्व प्रदान करते हुए काव्य के संबंध में अपना मत प्रस्तुत किया है –

''शब्द अर्थ बिनु दोष गुन, अलंकार रसवान।

ताको काव्य बखानिये, श्रीपति परम सुजान।।''[9]

अर्थात् सगुण शब्दार्थ जो दोषहीन व अलंकारों तथा रसों से युक्त हो काव्य कहलाते हैं।

11. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी –

द्विवेदी जी ने काव्य की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए लिखा है – ''अन्तःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम ही काव्य है।''[10]

12. रामधारी सिंह 'दिनकर' –

इन्होंने शब्दहीन भावनाओं को अभिव्यक्त करने की कला को काव्य की संज्ञा दी है –

''कविता वह है , जो अकथ्य को कथ्य करने का प्रयास करे।''[11]

13. जयशंकर प्रसाद –

छायावाद के प्रमुख कवि व लेखक जयशंकर प्रसाद जी ने भी काव्य की परिभाषा संबंधी विचार प्रस्तुत किए हैं, जो अतिमहत्वपूर्ण हैं –

''काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है, जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प अथवा विज्ञान से नहीं है।वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा है।'[12]

14. पण्डित जन्नाथदास 'रत्नाकर'

इन्होंने भी रमणीय वाक्य को काव्य माना है –

''होय वाक्य रमणीय जो काव्य कहावै सोय।

रतनाकर लक्षण करत यह बहु ग्रन्थनि जोय।।''[13]

लम्बी कविता

काव्य का शिल्प समय के अनुरूप परिवर्तित होता है, या कहें परिवर्तन की मांग करता है। शिल्पगत परिवर्तन ही साहित्य को जीवित रखता है। हिन्दी साहित्य में काव्य का प्रचलन आदिकाल से ही चलता आया है, किन्तु उसका स्वरूप सदैव समय के अनुरूप बदलता हुआ दृष्टिगत होता है। आदिकाल महाकाव्य का युग रहा, किन्तु उसके बाद काव्य के क्षेत्र में अनेक प्रयोग हुए, ये प्रयोग अंतर्मन की अभिव्यक्ति का ही फल है, यही अभिव्यक्ति प्रयोगधर्मिता को बनाए रखती है, इसी तथ्य पर आधारित अभिव्यक्ति की तलाश ही 'लम्बी कविता' की उपज है।

भारतीय साहित्य में काव्य का अस्तित्व तो आदिकाल से रहा है किन्तु हिन्दी में लम्बी कविता का आरंभ छायावाद के समय से माना जाता है। यहां यह प्रश्न उठता है कि आखिर हिन्दी में लम्बी कविता की आवश्यकता ही क्यों पड़ी ? इस प्रश्न का साधारण उत्तर है कि समय के अनुरूप परिवर्तन प्रकृति का नियम है, देशकाल, वातावरण, परिस्थितियों के अनुरूप मनुष्यों को अपने जीवन शैली में न जाने कितने परिवर्तन करने पड़े हैं, यदि ऐसा न हो तो उसका अस्तित्व ही संकट में पड़ जाता। दूसरे शब्दों में आधुनिक काल में औद्योगीकरण, नगरीयकरण, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्थितियों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली समस्याएं जैसे बेरोजगारी, भूख, कुण्ठा, निराशा आदि के फलस्वरूप समकालीन व्यवस्था के प्रति आक्रोश उत्पन्न हो गया। जब यही विद्रोह कुण्ठा, निराशा साहित्य में आयी तो लम्बी कविता का प्रादुर्भाव पाठकों के समक्ष हुआ।

लम्बी कविता की परिभाषा

1. हरिवंशराय बच्चन :– '' लम्बी कविता वह है जो लम्बी हो। '' [14]

2. **राजीव सक्सेना :–** ''आज की लम्बी कविता एक अनुभूति का क्षणिक भावावेग , एक संघटना खण्ड को उसके समस्त संदर्भों व सम्पूर्ण परिवेश से जोड़ने की प्रक्रिया में एक व्यापक और जटिल अनुभव को प्रतिफलित करती है।''[15]

3. **डॉ. रामदरश मिश्र :–** **''**लम्बी कविता वह है जो लम्बी होने के साथ– साथ जीवन के कई घुमावदार मोड़ों से गुजरती हुई एक जटिल यथार्थ का बोध और अनुभूति उभारती हो। यह अपने सफल रूप में स्वतंत्र ईकाई कही जा सकती है। असफल रूप में इसे छोटी कविताओं का फूहड़ विस्तार या द्विवेदीकालीन इतिवृत्तात्मक कविता की वंशज कह सकते हैं।''[16]

4. **नरेन्द्र मोहन :–** ''लम्बी कविताओं की अनिवार्य सृजनता के लिए बाध्य करने वाला प्रमुख तत्व सृजनात्मक तनाव ही है, यह सृजनात्मक तनाव विविध रूपों में , आयामों में आज कल के जीवन में व्याप्त रहता है। यह तनाव व्यक्ति और व्यक्ति के बीच का , संस्कृति, भाषा और राजनैतिक शक्तियों के बीच का तो है ही, बुनियादी तौर पर सृजनात्मक स्तनों पर यह सामाजिक स्तरों से प्रेरित विचार और लहू के बीच के रिश्तों का तनाव है – एक क्रूर परिस्थिति में जिन्दा रह पाने की तीव्र बेचैनी , गहरी वेदना हर जोखिम उठाकर मानवीय प्रेम के धरातल को पुरूट करते रहने की बलवती इच्छा से पैदा हुआ तनाव ; तनाव की इन्हीं संदर्भों में, धरातलों , आयामों, रंगों और आशयों से निर्ति होती है लम्बी कविता। तनाव की इस विविध धर्मिता का नाम है लम्बी कविता, जो महज वैचारिकता से सध नहीं सकती, कोरे संवेग और उत्तेजना से निभ सकती है।'' [17]

5. **नामवर सिंह –** '' लम्बी कविता नाटकीय कविता है। क्योंकि रोजमर्रा की जिन्दगी में अन्तर्विरोधों को उजागर करने के लिए नाटकीयता सबसे अधिक कारगर माध्यम है। एकालाप, आत्मालाप, सम्बोधन, पात्रीय क्रियाकलाप , सम्भाषण आदि शैलियाँ कविता को आगे बढ़ाकर लम्बी कविता का रूप देती हैं।''[18]

6. **गजानन्द माधव 'मुक्तिबोध' –** ''यंथार्थ के तत्व परस्पर गुम्फित होते हैं, साथ ही पूरा यथार्थ गतिशील होता है। अभिव्यक्ति का विषय बनकर जो यथार्थ प्रस्तुत होता है, वह भी ऐसा ही गतिशील है, और उसके तत्व भी परस्पर गुम्फित हैं। यही कारण है कि मैं छोटी कविताएँ लिख नहीं पाता और जो छोटी होती हैं, वे वस्तुतः छोटी न होकर अधूरी होती है। (मैं अपनी

बात कह रहा हूँ) और इस प्रकार की न मालूम कितनी ही कविताएँ मैंने अधूरी लिखकर छोड़ दी है। उन्हें खत्म करने की कला मुझे नहीं आती , यही मेरी ट्रैजड़ी है।''[19]

लम्बी कविता के तत्व

लम्बी कविता को आधुनिक काल में काव्य की सबसे सशक्त एवं प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति का साधन स्वीकार किया गया है। इसमें कवि सिर्फ भावनात्मकता को महत्व न देकर विभिन्न परिस्थितियों, मन की पीड़ा युक्त मानसिकता सामने लाता है, इन्हीं का चित्रण लम्बी कविता में विस्तारपूर्वक होता है। प्रदीर्घता, नाटकीयता, अन्विति, विचार तत्व एवं सर्जनात्मक तनाव आदि ऐसे ही गुण समझे जा सकते हैं।

विभिन्न विद्वानों, लेखकों एवं समीक्षकों द्वारा प्रस्तुत लम्बी कविता की परिभाषाओं के अध्ययन उपरान्त कुछ विशिष्ट तथ्य हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। वास्तव में यह वे तथ्य अथवा विशेषताएँ हैं जिनके द्वारा लम्बी कविता का स्वरूप निर्धारित होता है। प्रस्तुत परिभाषाओं के आधार पर की रचना प्रक्रिया एवं साहित्यिक तत्व प्रस्तुत होते हैं ।

लम्बी कविता की परिभाषाओं के आधार पर निम्न विशेषताएँ परिलक्षित होते हैं –

1. दीर्घता
2. सर्जनात्मक तनाव
3. नाटकीयता
4. अन्विति
5. विचार तत्व
6. अंतहीन अंत

1. दीर्घता :– आकार लम्बी कविता की प्रथम विशेषता है। जैसा कि नाम से ही विदित होता है कि जो कविता सामान्यतः लम्बी हो वही लम्बी कविता मानी जाती है। इसकी यही विशेषता मानव जीवन के विभिन्न फलकों को एक साथ अभिव्यक्ति प्रदान करने में समर्थ बनाती है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि लम्बी कविता अपने आप में जीवन के विभिन्न फलकों जैसे – जीवन की जटिलता, कुण्ठा, निराशा, आक्रोश, हताशा, विवशता घुटन से भी

मानसिकता जिससे व्यक्ति चाह कर भी बाहर निकल नहीं पाता आदि सभी को अपने में समेट कर प्रस्तुत करने में सक्षम है।

2. सर्जनात्मक तनाव – वर्तमान परिवेश में मनुष्य का जीवन अनेक जटिलताओं एवं मानसिक स्थितियों से भरा हुआ है, और इन स्थितियों से उत्पन्न वेदना, तनाव, कुण्ठा, निराशा एवं विषाद आदि भावनाओं को अभिव्यक्त करने हेतु प्रत्येक काल के कवि के अन्दर एक प्रकार संघर्ष चलता रहता है। इस कारण आधुनिक काल में कवियों द्वारा सर्जनात्मक तनाव की अभिव्यक्ति हेतु संघर्ष अनवरत् किये जा रहे हैं।

लम्बी कविता के प्रमुख तत्वों में सृजनात्मक तनाव अनिवार्य तत्व स्वीकार किया गया है। सृजनात्मक तनाव के द्वारा ही कविता प्रदीर्घता प्रदान करता है, और इसके सफलतापूर्वक अनुप्रयोग द्वारा लम्बी कविता के उद्देश्य पूर्ति संभव है।

''लम्बी कविता की रचना प्रक्रिया का एक विधायक अन्तवर्ती पहलू सर्जनात्मक तनाव है। सर्जनात्मक तनाव की प्राथमिक स्फूर्ति या उसका मात्र एक क्षण लम्बी कविता नहीं लिखवा सकता, भले ही उससे एक सुन्दर बिम्ब या एक अच्छी छोटी कविता की सृष्टि हो जाए। लम्बी कविता की रचना तभी संभव है सर्जनात्मक तनाव दीर्घकालिक हो तथा विस्तृत फलक पर अपनी क्रियात्मकता सिद्ध कर रहा हो।''

3. नाटकीयता :– लम्बी कविता की द्वितीय विशेषता अथवा गुण हैं नाटकीयता, यह वह तत्व है जो कवि पर निर्भर नहीं होता । विभिन्न विषयों के आधार पर नाटकीयता का तत्व भी भिन्न– भिन्न होता है। लम्बी कविता में कवि नाटकीयता का उपयोग करते हुए विभिन्न परत दर परत स्थितियों का चित्रण करता है, बाह्य के साथ आंतरिक द्वन्द्व का भी चित्रण करता है जिससे कवि की अनुभूति सजीव प्रतीत होती हैं।

नाटकीयता लम्बी कविता के रचना पद्धति की एक अनिवार्य विशेषता है। वर्तमान युग की जटिलताओं और अंतर्विरोधों से युक्त स्थितियों को भलीभांति प्रकट करने में यह गुण सर्वथा उपयुक्त है। नाटकीयता के द्वारा ही व्यापार एवं कार्यों को प्रकट कर स्थितियों के अन्तर्विरोधों का बोध उजागर किया जा सकता है। किसी भी भाव को सामान्य रूप में भी प्रकट किया जा सकता है किन्तु वह हृदय पर वह प्रभाव नहीं कर पाता जितना कि नाटकीयता द्वारा किसी स्थिति के परत दर परत संवेदनाओं को प्रकट कर किया जा सकता है।

4. अन्विति – यह लम्बी कविता की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। इस के कारण ही लम्बी कविता अपने कथ्य, तथ्य एवं प्रसंगादि को परस्पर सम्बद्ध करके रखती है। लम्बी कविता बिम्ब अथवा विचार आधारित होती है। लम्बी कविता में अनेक कार्य, विभिन्न खण्डों से समाहित रचना प्रक्रिया जिसके द्वारा वर्तमान युग की जटिलता, कुण्ठा, निराशा, आक्रोश आदि को अभिव्यक्त करना संभव हो पाता है। लम्बी कविता का बाह्य रूप भले ही एक–दूसरे से सम्बद्ध अथवा संयोजित दिखाई न दें किन्तु इसके अंतः में तथ्य, कथ्य, प्रसंग व घटनादि एक सूत्र में बंधी रहती है यही गुण तो अन्विति कहलाती है, इसके अभाव में लम्बी कविता अपने उद्देश्य प्राप्त करने में कदापि सफल नहीं हो पाएगी। रामदरश मिश्र जी लम्बी कविता के संबंध मे विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं कि – ''लम्बी कविता अनेक खण्डों की यात्रा है और ये अनेक खण्ड अपने स्वभाव में एक दूसरे से विषम होकर भी संदर्भ से जुड़े हुए हैं। इसलिए लम्बी कविता की भाषा , मूड, बिम्ब विधान, छन्द सभी में अनेकरूपता दिखाई पड़ती है। (रामदरश मिश्र– मतान्तर, पृ.26)

5. विचार तत्व – विचार तत्व लम्बी कविता का एक अनिवार्य व महत्वपूर्ण तत्व है। वर्तमान ज्ञान, परिस्थितियाँ, जीवन शैली, भावनाएँ, हमारी आस्था, मन, हृदय , बुद्धि एवं अवधारणाओं से निर्मित हमारी सैद्धान्तिक परिपाटी को अत्यधिक प्रभावित किया है। जीवन की कठोर वास्तविकता जैसे –जैसे हमारे समक्ष उपस्थित होती गई तथा संघर्ष से निवर्तन करना सम्भव नहीं रह गया, तो इस संघर्ष से मुक्ति हेतु रचनाकार की आकुलता भी परिवर्तित हो गयी। फलस्वरूप साहित्य में भी भावनाओं का स्थान विचारों ने ले लिया। चिन्तन अथवा विचार उलझन से भरा कार्य है, इसका उद्भव समस्या से होता है। यह प्रक्रिया तब तक निरंतर चलती ही रहती है जबतक कि उपस्थित समस्याओं का समाधान न हो जाए।

विचार एक मानसिक प्रक्रिया है, जब इसमें व्यक्ति विशेष के स्थान पर सामाजिकता का संस्पर्श होने लगता है तब विचार में सार्वजनिकता की मात्रा अधिक होती है। लम्बी कविता अवलोकन एवं विश्लेषण में रचनाकार के विचारों का विशेष महत्व रहता है। डॉ. बलदेव वंशी जी ने विचार तत्व को मुख्यतः पाँच स्थितियों में विभक्त करते हैं –

1. परिज्ञान

2. अनुचिन्तन

3. द्वन्दात्मक तनाव

4. निर्णय

5. संवेदनात्मक उद्देश्य

6. अंतहीन अंत – लम्बी कविता का समापन अत्यन्त महत्व रखता है। लम्बी कविता अंत रहित भी हो सकती है –यथार्थबोध एवं संरचना के स्तर पर। मुक्तिबोध ने इस विषय पर विचार करते हुए लिखा है कि – ''नहीं होती, कहीं भी खत्म कविता नहीं होती कि वह आवेग त्वरित कालयात्री है।''

मुक्तिबोध जी ने अपने प्रसिद्ध लेख में अपनी लम्बी कविताओं के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि – ''यंथार्थ के तत्व परस्पर गुम्फित होते हैं, साथ ही पूरा यथार्थ गतिशील होता है। अभिव्यक्ति का विषय बनकर जो यथार्थ प्रस्तुत होता है, वह भी ऐसा ही गतिशील है, और उसके तत्व भी परस्पर गुम्फित हैं। यही कारण है कि मैं छोटी कविताएँ लिख नहीं पाता और जो छोटी होती हैं, वे वस्तुतः छोटी न होकर अधूरी होती है। (मैं अपनी बात कह रहा हूँ) और इस प्रकार की न मालूम कितनी ही कविताएँ मैंने अधूरी लिखकर छोड़ दी है। उन्हें खत्म करने की कला मुझे नहीं आती , यही मेरी ट्रैजड़ी है।''[20]

निष्कर्ष –

लम्बी कविता आधुनिक काल की देन है, जो इधर आवश्यक साबित हुई। काव्य अपने परम्परागत स्वरूप में वर्तमान युग की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं थी, फलस्वरूप हिन्दी साहित्य में लम्बी कविता का प्रादुर्भाव हुआ। यह भी अनुभव किया गया कि छोटी कविता स्वयं समकालीन सोच एवं संवेदना को अभिव्यक्ति देने में समर्थ नही है। कहा जा सकता है कि अपने व्यापक अनुभवों को वृहद फलक पर प्रस्तुत करने के लिए ही लम्बी कविता का जन्म हुआ। लम्बी कविता के माध्यम से सामान्यतः उन अनुभव खण्डों को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया जाता है, जो सामान्यतः अन्य काव्य रूपों में समाहित नहीं हो सकते।

प्रत्येक काल के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से युग की विशेषताओं और समस्याओं को अभिव्यक्ति दी है। इन युग–विशिष्ट समस्याओं की विशालता को व्यक्त करने के

लिए साधारण लघु कविताएँ अपर्याप्त महसूस की गईं और परिणामस्वरूप ''लंबी कविता'' का निर्माण संभव हो गया। कवि का व्यक्तित्व कविता की दीर्घायु में सहायक होता है। कवि अपने काव्य में अपने व्यक्तिगत भावों, अनुभूतियों और अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है। इस संदर्भ में कुछ कविताएँ छोटी हो जाती हैं तो कुछ कविताएँ लंबी हो जाती हैं।

आधुनिक युग समस्याओं का युग है तथा इस विस्तृत एवं विशालता को अभिव्यक्त करने के लिए लघु साँचे अपर्याप्त अनुभव किए गए और फलस्वरूप लम्बी कविता आवश्यकता महसूस की गयी। ''लम्बी कविता'' को आधुनिक युग की काव्याभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी।

संदर्भ ग्रंथ –

1. (नाट्यशास्त्र : भरतमुनि, 17/123)
2. (साहित्य दर्पण, पृ. 2)
3. (रस गंगाधर, 1, 1)
4. (काव्यालंकार, पृ. 16)
5. (काव्यादर्श, 1/10)
6. (काव्यालंकार सूत्रवृत्ति, 1/1/12)
7. (सं. डॉ. श्यामसुन्दर दास : कबीर ग्रंथावली : विचार कौ अंग, काशी नागरी प्रचारिणी सभा , साखी सं. 7, पृ. 56)
8. (आचार्य चिन्तामणि : कविकुलकल्पतरू, प्र. 1/7)
9. (श्रीपति : काव्य सरोज, दल 1/1)
10. (आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी : रसज्ञ रंजन, पृ. 62)
11. (रामधारी सिंह 'दिनकर' : सीपी और शंख, उजली आग, पृ. 47)
12. (जयशंकर प्रसाद : काव्य और कला तथा अन्य निबंध , 38)
13. ('रत्नाकर' : उद्धृत साहित्य सुधानिधि, पृ. 25)

14. (डॉ. हरिवंशराय बच्चन – पत्रिका मतान्तर, पृ.26)

15. (राजीव सक्सेना – पत्रिका मतान्तर, पृ.24)

16. (रामदरश मिश्र – पत्रिका मतान्तर, पृ.26)

17. (डॉ. नरेन्द्र मोहन – लम्बी कविताओं का रचना विधान, पृ.3)

18. (नामवर सिंह – कविता के नए प्रतिमान, पृ.150)

19. (गजानन्द माधव मुक्तिबोध – एक साहित्यिक की डायरी, पृ.29)

20. (गजानन्द माधव मुक्तिबोध – एक साहित्यिक की डायरी, पृ.29)